VOLUME-1 ● ISSUE-3 ● DECEMBER 2020

samvaadshaalaa

NEWSLETTER

COVER STORY

LEKHAN YATRA

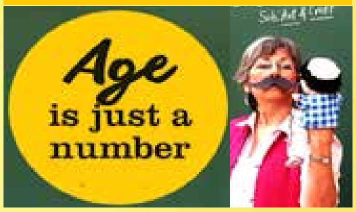

...on page no. 7

PUBLISHER'S NOTE

BEFRIEND BOOKS FOR LIFE AND NEVER BE ALONE

Walter Winchell says:
"A real friend is one who walks in when the rest of the world walks out."

Books EMBRACE
you when you are ALONE

Books SOOTHE you when you SUFFER

Books ILLUMINATE
when you are in ALIENATED

BOOKS33
is unique platform for writing enthusiasts.
It is a HOME of the AUTHORS,
By the AUTHORS & For the AUTHORS.

Managing Director
Dinesh Kumar Sinha

Editor-in-Chief
Prof (Dr) Shalini Verma 'LIFOHOLIC'

Advisory Board

Daniel Rudolph, Global Creative, United States

Rajendra Prasad Koirala, Director - HR, Kathmandu, NEPAL

Sanjay Gora, DGM, SAIL India

Prof (Dr) Susmita Paul, Founder 11Chaa Street

Reetesh Anand, Lead Consultant - Editorial

Prof (Dr) Monica Khanna, Mentor Author – Parenting, Child Care & Children Literature

Shamim Nida, Lead Consultant - Creatives

Amit Anand, Lead Consultant - IT & Communications

From the Editor's Desk

Prof (Dr) Shalini Verma 'LIFOHOLIC'

Namaskaar Friends

Glad to come up with this Year ender December issue of SamvaadShaalaa. Finally, time to say GOODBYE to 2020!

The year 2020 has been very DIFFERENT for all of us – kiddos-youngsters-oldies, men-women, working & non-working people, rich & not-so-rich. One thing that we all clung onto during this year is HOPE.

Hope is SURVIVE and STAY ALIVE with our near and dear ones. The 'poet' in me took me over and some words got squeezed out on the white sheet as:

Dear Hope,

I always HAVE LOVED and WILL LOVE you sooooooo much!

Sorry for writing late this time. The last time we met, was on New Year's Eve.

TOGETHER, we bade farewell to 2019 and hugged 2020.

You told that 2020 is going to be a FANTASTIC YEAR.

I always HAVE BELIEVED and WILL BELIEVE you sooooooo much!

✓ **We help you PUBLISH your BOOKS**
✓ **We help you PROMOTE your BOOKS**
✓ **We help you POSITION, RE-POSITION**
✓ **EXPAND your reach as an 'AUTHOR'**

Contact Us: support@books33.com ● Call Us: +91-8376011031 ● www.books33.com

Snowy January and frosty February were spent gaily in the cosy warmth of friends like Lakshya (Aim), Vikas (Growth), Garv (Esteem), Harsha (Joy), and Shakti (Energy) in the theatre, in the park, in the subways, in the malls, in the cafeteria, on the roads, on the flyovers.

Come March and the LOCKDOWN came along. We got LOCKED within the confines of HOMES. The doorbells STOPPED ringing…the vehicles STOPPED honking…the hawkers STOPPED ferrying on our streets.

I called you and you said "THIS TOO SHALL PASS"

The milkman, the laundryman, the newspaperman, the vegetable-man, the postman…all DISAPPEARED.

I called you and you said "THIS TOO SHALL PASS"

The schools got closed. The office premises got closed. The parks got closed. The gyms got closed, the swimming pools got closed. The markets, the malls, the metros…all got CLOSED.

I called you and you said "THIS TOO SHALL PASS"

Binayak was benched. Romesh was retrenched. Farooq got furloughed. Brave-hearted Baijayanti accepted her salary curtailment with a broad smile (though forced on her face). Ravishing Raveena had to start feeding her kids with thin-layered jam rolled in the dry chapatis (in dearth of expensive green vegetables). Feisty Fatima started understanding what FEAR feels like!

I called you and you said "THIS TOO SHALL PASS"

Old Shashtri uncle took his last breath in his bedroom and not on the hospital bed. Young Sushant took to the noose. Designer Diwakar drowned himself in the creek. Funny Bone Firoza flung off her penthouse.

I called you and you said "THIS TOO SHALL PASS"

Now, I HOPE that we come out of it before any more PASSING AWAY

GOODBYE 2020!!!

shalini.verma@books33.com

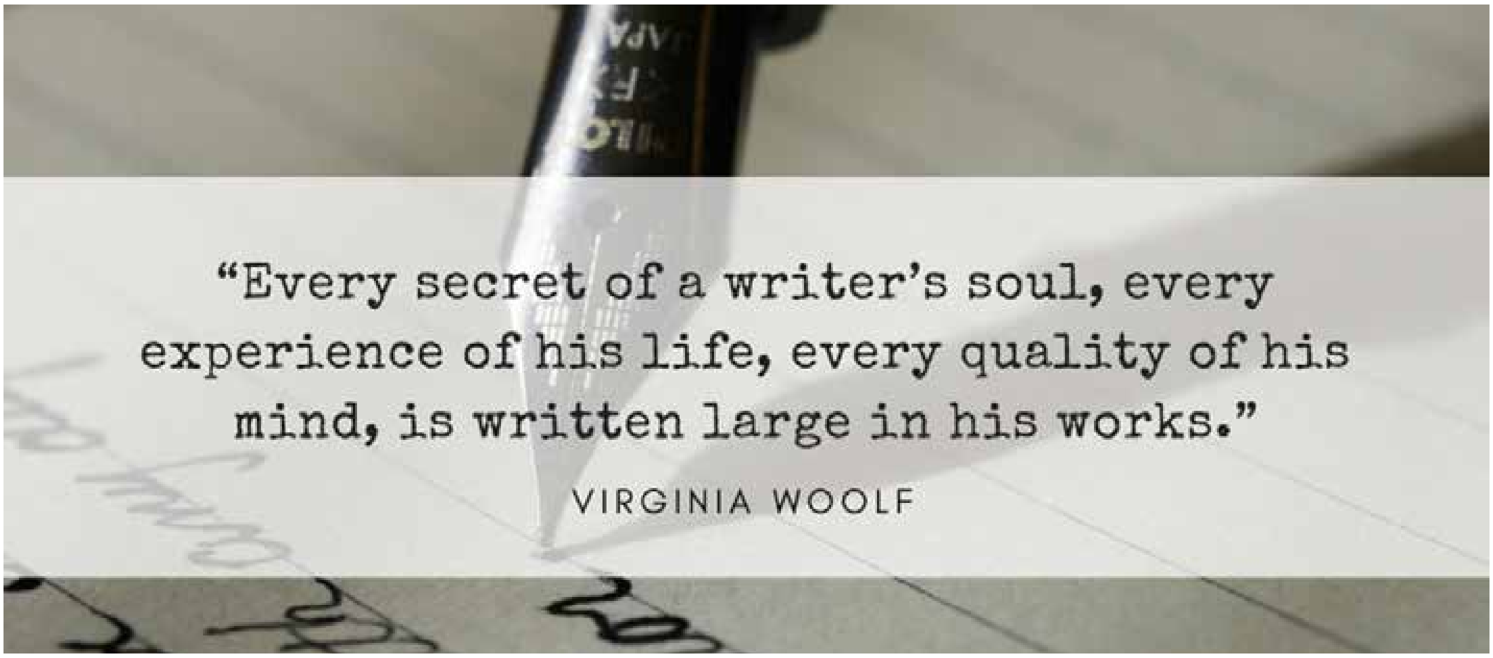

samvaadshaalaa
NEWSLETTER

INDEX

अतुल्य भारत: The Incredible Art & Craft of India: बांधनी कला 1

मधुबनी कला 3

The Book Planet:

Exploring Taboos in Children's Literature 5

Lekhan Yatra: Age is just a number 7

Social Media: The Reach and the Path Ahead 10

पहले पेट पूजा, फिर कोई काम दूजा

Bharwa Amla Mirchi 11

त्योहारों के मायने 13

Domestic Violence in the Covid -19 Period... 15

Relationship - Our World (Relationship based Short Stories):

भोलवा का कुर्ता 17

Her Charisma, His Swag 20

HALE 'n' HEARTY (Wellness 'n' Health) 21

Pose... Write... Post... and Become winning MODEL 23

Exams 'n' Education:

नयी शिक्षा नीति के अनुसार मातृ भाषा देने के फायदे नुकासन 24

Let Your Selfie Make You A Featured Model 26

Story Writing Contest 27

अतुल्य भारत:

The Incredible Art & Craft of India

बांधनी कला

About the Author: Sneh Anand is an HR professional currently working as a Sr. ERO (Sr. Employee Relations Officer) at Indian Oil Corporation Limited. She can be reached at : sneh.anand2008@gmail.com

भारत संस्कृति और परंपरा का देश है। इसकी संस्कृति को इसके इतिहास , इसकी परंपरा और इसकी कलाओं ने संजो रखा है। कलाओं से समृद्ध हमारे देश के कोने कोने में अनेकानेक कलाएं बस्ती है। ऐसी ही ऐसी ही एक कला है - बांधनी कला।

बांधनी कला भारत के पश्चिम भाग जैसे कि गुजरात, राजस्थान, सिंध, पंजाब आदि क्षेत्रों का कला है। इतिहासकार कहते है की यह कला सिंधु घाटी सभ्यता की अमानत है जो की 5000 इ.पू के वक्त प्रचलित था। बांधनी कला हमे अजंता की गुफा पर अंकित बुद्ध की प्रतिमाओं में देखने को मिलता है, इससे यह ज्ञात होता है कि यह परंपरा कितनी प्राचीन है। बांधनी का शाब्दिक अर्थ है - बांधना। अर्थ के अनुसार यह कला भी बांधने से ही सम्बंधित है। इस कला में कपड़े को किसी रस्सी से अनेक जगह पर बाँध उसकी रंगाई की जाती है। सूख जाने के पश्चात इसे खोलने पर बेहद खूबसूरत आकृतियां उभर आती है। किन्तु यह उतना सरल नहीं है जितना हमे लगता है। वास्तव में भारत की हर कला में श्रम की चक्की चलानी ही

पड़ती और बहुत एकाग्र प्रयास के बाद ही उस कला की अनुभूति हम कर पाते है। बांधनी कला काफी कुशल कारीगरों की मांग करती है। रंगाई की ये कला को अनेकानेक प्रकार से की जाती है। कपड़े को एक सही जोर से बांधने और उसे उसके उचित मात्रा के रंग में डाल कर ही उससे आकृतियाँ प्राप्त होती है। बांधनी कला की ये ख़ासियत है कि इसे प्राकृत रंगों से ही बनाया जाता है और इसमें केवल हाथों का ही इस्तेमाल होता है। इसमें मूलतः पीला, लाल , नीला और हरा रंग प्रयोग में लाया जाता है। इसमें विशेषतः चटक रंगों का ही प्रयोग किया जाता है।

गुजरात का बुज शहर इसके चटक लाल रंगों के लिए जाना जाता है। इस शहर में बंधनी की रंगाई प्रक्रिया बड़े पैमाने पर की जाती है, क्योंकि इस क्षेत्र के पानी को रंगों, विशेष रूप से लाल और मैरून को एक विशेष चमक देने के लिए जाना जाता है। भारत के अन्य दूसरे प्रांतों में भी लाल रंग की प्रधानता दी जाती है और इसे बेहद शुभ समझा जाता है। इस कारण शादी विवाह तथा पूजा में लाल बांधनी की मांग बढ़ जाती है। इतिहास मुताबित पहली बांधनी साड़ी बाणा भट्ट हरिशचंद्र के विवाह उत्सव में पहनी गयी थी। बांधनी कला की लोकप्रियता के कारण उसे एक उद्योग का रूप देना पड़ा और आये दिन इस कला में नए नए बदलाव आते रहते है। रंगों में भी काफी प्रयोग किया जाता है। दूर दूर से लोग गुजरात की बांधनी साड़ी , दुप्टे , चादर तथा अन्य लिबास मंगवाते है। इस कला को बदलते वक़्त के साथ कई सारे नाम मिले जैसे - बंधेज , सुण्डूगी आदि। भारत की इस कला ने विश्व इतिहास को कला की एक धरोहर भेंट की है।

मधुबनी कला

हमारा भारत, हमारी संस्कृति, हमारी कला, नाम सुनते ही हमे गर्व होता है हमारे देश की कार्य कुशलता पर और अनायास ही हम हमारी संस्कृति में खो जाते है। बात अगर कलाओं की हो तो देश का हर एक प्रान्त हमे सदैव ही गर्वान्वित महसूस करवाता है। ऐसे ही कलाओं के मंदिर में एक कला हमे आकर्षित करती है - मधुबनी कला।

मधुबनी कला भारत से जुडी एक संस्कृति है जो बिहार के मिथिला ,दरभंगा ,मधुबनी , पूर्णिया तथा आस पास के क्षेत्रों की विशेष कला है। आज यह कला भारत ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रचलित है। इस कला का विस्तार रंगोली के रूप में शुरू होकर आज कपडे दीवारों कैनवास आदि पर उकेरी जाती है। इस कला के इतिहास का सम्बन्ध पौराणिक कथा से है। मूलतः इस कला में हिन्दू देवी देवताओं के चित्र को प्राथमिकता दी जाती है। कहा जाता है कि सर्वप्रथम राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह में इस प्रकार की पेंटिंग मिथिला की स्थानीय महिलाओं से बनवाया था। और आज ये बिहार के किसी भी उत्सव के शुभ चिह्नों के रूप में बनाया

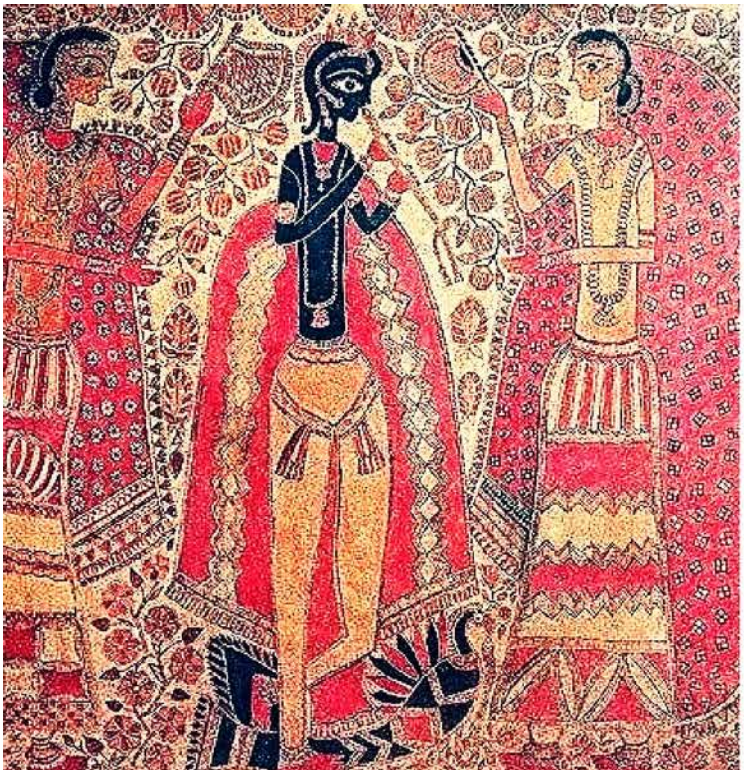

जाता है। इस कला में हमे प्रकृति की महत्ता को भी दर्शाते हुए सूर्य , चन्द्रमा बदल व् अन्य प्रकृत छटा को अंकित किया जाता है।

शुरुआती समय में इस कला का भार केवल स्त्रियों के कंधे पर था लेकिन अब पुरुष वर्ग भी अपनी भागीदारी बखूबी निभाते दिखते है। अंतर्रा-ट्रीय स्तर पर भी इस कला को खूब सम्मान मिलता है। दूर दूर से लोग इस कला को समझने और इससे अपने घरों आदि को सजाने के लिए लाते है। इस कला का ऐसा वर्चस्व है की यह हमे बिहार ही नहीं अपितु देश के कई कोने के सार्वजनिक स्थानों पर लगया जाता है। बिहार के अनेक रेलवे स्टेशनों जैसे पटना , भागलपुर , मिथिला , मधुबनी आदि पर ये कला हमे उकेरी हुए नज़र आ सकती है।

इस कला में चटक रंगों का प्रयोग होता है जैसे हल्दी से पीला रंग, पत्तों द्वारा हरा रंग , तरह तरह के फूलों से अन्य कई तरह के रंगों से यह चित्र बनता है। बिहार में अल्पना के रूप में यह खूब प्रसिद्ध है। किसी भी शुभ कार्य में इसका चित्रण अत्यंत ही सुन्दर लगता है और कुशलता से कार्य को सिद्ध करने की मान्यता को भी पूरा करता है। हाल में ही 2018 में मधुबनी रेलवे स्टेशन पर एक कार्यक्रम के दौरान मिथिला कला को विश्व कीर्तिमान में शामिल किया गया। इस कला ने हमारे देश को केवल सांस्कृतिक धरोहर ही नहीं प्रदान की अपितु स्थानीय लोगो को जीविकोपार्जन भी प्रदान किया।

कला हमारे देश को एक मूक परिभाषा होती है। हमारी कला बिना बोले ही हमे कई बातें बता देती है। चित्र में उभरी प्राकृत छटा हमारे प्रकृति प्रेम को दर्शाती है। हमारे रस्म-रिवाज, हमारा इतिहास और हमारा भारत इन्ही सब का तो दर्पण है हमारा कला ,जिसे सम्पूर्ण संसार देखता है।

BOOK EARTH: THE BOOK PLANET

Exploring Taboos in Children's Literature

Dr. Monica Khanna (Ph.D., M.Phil., M.A.) works as Associate Professor at Indira Institute of Business Management, and Consultant at Indian School of Management and Entrepreneurship. She has around twenty-five years of experience in the field of academics as well as in journalism and business. She has published ten books, including scholarly books on gender studies, books on grammar and composition, books of short stories and picture books for children. She also writes a weekly column for a Navi Mumbai based newspaper, Newsband. She lives in Mumbai with her family. She may be reached at: monicakhanna2006@gmail.com

Gone are the days when children's literature refrained from touching upon serious issues, painting instead a rosy picture of vibrant blooms in a world that seemed to exist without any blemishes; where there was a clear and simplistic distinction between good and evil, with good always emerging victorious in the end, and the evil forces being punished for their sins.

Children's literature today reflects the complexities of life in shades of grey, and addresses real issues that children are forced to confront – from bullying to inclusion to death, and even divorce. Vinitha R's recently released book 'Ammu and the Sparrows', beautifully illustrated by Jayesh Sivan, and published by Pratham Books, subtly expresses the feelings of a child dealing with the divorce of his parents. "Divorce is painful, and never easy for anyone, least of all for children who are unable to express what they feel in words," says Vinitha. It is their speechlessness that Vinitha tries to embody in her story. Firmly believing that storytelling can act as therapy, Vinitha claims that stories are not merely starting points for a conversation, but also serve to instil a feeling of optimism. Children are resilient and have the capability to bounce back with greater positivity. No matter what is thrown at them, they continue to hold on to a glimmer of hope and live in the present.

The story begins with Ammu waiting for his 'Amma' and 'Accha' who do not come. He is also waiting for sparrows, "the little brown birds" who have not turned up, despite the variety of food that

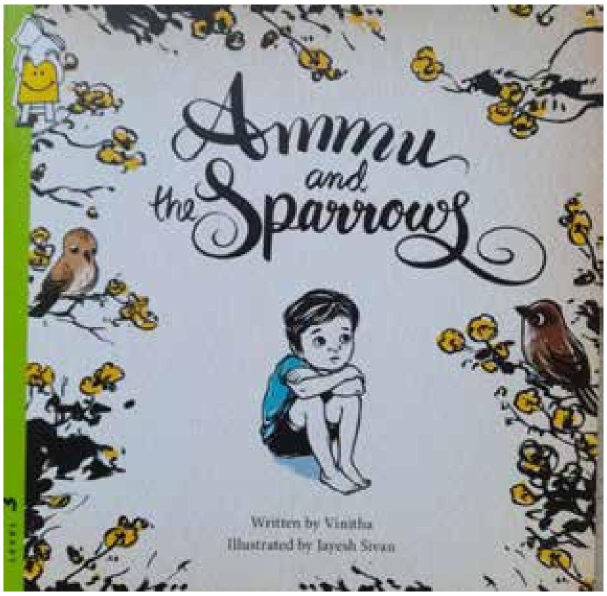

has been laid out to tempt them. "Do you miss them?" his grandma Ammamma asks, referring simultaneously to the sparrows as well as Ammu's parents. Even as Ammu replies in the negative, Ammamma knows his heart, and explains to him that they must be busy. And then the sparrows come back, bringing with them a ray of hope and joy, filling Ammu's indomitable spirit with inexplicable ecstasy.

The story makes only one fleeting reference to the divorce, when Ammamma tells Ammu that the decision in court is still pending and will take time. The reference, however, is not explicit or overt, and may easily be missed by a not-so-observant reader. And therein lies the eloquence of the book. It does not dramatize the issue nor delve into it at length. It relies instead on the multiple layers through which the story is told, leaving the reader the choice to unfold the layers at his or her own discretion, and weave a web around the thread that he or she chooses to pursue. The ending of the story too is open ended, with the only closure being that of hope for a better, happier tomorrow.

The illustrations, space and muted use of colours complement the mood of the story. Unlike most children's books which thrive on bright, vibrant hues, 'Ammu and the Sparrows' moves from black and white to earthy browns, with a mere dash of yellow and blue.

Reasonably priced and translated into five languages ensures vast accessibility of the book, breaking class and language barriers. Having spent two decades writing for children on fascinating and varied subjects, Vinitha has now ventured into writing fiction and semi-fiction for a larger adult audience. Given her exceptional storytelling skills, there is no doubt that an exploration of a new genre will give birth to more readers who can soak in a glimpse of the world from her unique perspective.

LEKHAN YATRA

"OBSESSION with writing; LOVE nature,creative craft, children's literature,drawing pun cartoons, gardening,wildlife, and her grandchildren" , are few words that describe our AUTHOR OF THE MONTH, Leela Gaur Broome, who stepped into the WORLD OF LETTERS at the Age of 58!

After completing her schooling from Delhi, she did her B.A.English Hons. Degree from Fergusson College, Pune.

She also holds a degree from the Royal School of Music London, in pianoforte, standing first in the All-India Finals Competition.

Later, she taught music, mime, dance and singing for several years in three schools in Pune.

Creative person, to the core she is! She has dabbled in several crafts including papier mache, cross stitch, knitting, embroidery, while living on a remote tea estate in South India with her husband, who was a tea planter there.

She and her family left the South and returned to Pune and bought barren farmland as they had a dream to begin dairy farming and grow everything organically.

The farm was soon to become an urban forest and their pride and joy.

From 1990 - 2006 Leela ran Nature Trails Environment Residential Camps for children, the first of its kind in India, and it soon became a role model for all succeeding nature camps in the country.

Her one-time campers now hold excellent Environment posts in India as well as abroad - as Conservationists, lawyers, activists, authors, vets, photographers, research scientists, and in forest management and more.

The couple lived on the land, surrounded by a multitude of indigenous trees, several water bodies, and a growing population of birds.

Writing was her lifelong ambition right from the age of 14.However, she couldget to it only after all her other responsibilities were over. She entered the world of Children literature in 2002 with herstories published in several children's magazines and newspapers.

Her first book was published in 2010 and had a lovely review by Ruskin Bond. This was FLUTE IN

THE FOREST. Soon it was followed by others like RED KITE ADVENTURE, The ANAISHOLA CHRONICLE, and EARTHQUAKE BOY.

Her stories, cartoons, pun cartoons, craft ideas, interviews and games are mostly on environment and nature subjects, as she deeply feels that Indian children (and their parents) need to be proud of their environment and to learn to value it and care for it.

She makes it a point to spreading messages to care for the outdoors and nature, our flora and fauna through her writings and guest sessions.

She loves interacting with school children, including her own grandchildren, and take every opportunity to inculcate in them a love for reading good books, for nature, birds, animals, and wildlife

With her endeavours, she hopes to build a sense of purpose in each child, to care for our motherland - INDIA, asshe is like no other, VALUE her and LOVEher.

In her own words, “There’s a good story in every action, location and conversation I see, or hear, and I have this great urge to write, write, write, and get as many stories out there for our children to read as is possible’!

She has written four books so far; each has taken approximately 2 years to complete. At present, she is engrossed in completing her fourth and fifth books.

SOCIAL MEDIA

The Reach and the Path Ahead

It's really amazing to be around friends of every age located in all corners of the globe, that too on real time basis.

About the Author: Dr Susmita Paul is the Founder & Managing Director of Aviors Management & Consultancy Pvt. Ltd and 11Chaa Street. She lives in Delhi-NCR with her family. She may be reached at : spaul.aima@gmail.com

Social media has touched us deep and revolutionised the concept of virtual emotions.

It's difficult to stop us from diving into this virtual world to meet our dear ones, see them, talk to them and refresh our heart with a fresh breath of air again and again.

In professional front too, social media plays a vital role in bridging the gaps and flow of knowledge across domains with experts, practitioners and beginners. It is frequently observed that social media buddies play important roles in shaping career change, growth and opportunities in all possible ways and means.

The pandemic made it clear that to survive, that too when things are not going as we had foreseen earlier, we need strong relationships.

One very import learning we all have had is

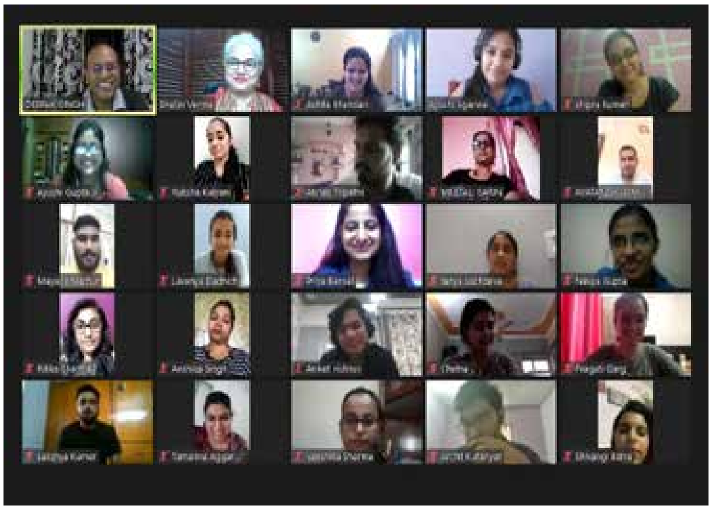

that RELATIONSHIPS ARE NO LONGER DEPENDANT ON PHYSICAL CONNECT.

As rightly said by Oscar Wilde, "Ultimately the bond of all companionship, whether in marriage or in friendship, is conversation."

And social media has eliminated all COMMUNICATION BARRIERS.

However, with all the beautiful things, comes some dots...

How do we differentiate...

1. Friendship vs. Followers

2. Conversation vs. Comments

3. Emotions vs. Smileys

How do we hold back the basic structure of relationship in its purest form?

The question keeps on haunting me more than the beauty of social media for our next generation.

The tussle between its value and the price is worth pondering over…

पहले पेट पूजा, फिर कोई काम दूजा...

Bharwa Amla Mirchi

By Nidhi Jain

About the Author: Nidhi Jain is a celebrity chef and a youtuber. The USP of her recipe is that they are easy to make with the normal ingredients that are readily available. She lives in New Delhi. She can be reached at : koiralarp46@gmail.com, 977-9851136302

YouTube Channel, Swadshaala : https://www.youtube.com/channel/UCKgmMl1_EqElJIzKYKVEzbw

Today I am sharing recipe which is much needed in times of this Panademic that is rich in vitamin C and iron and a great source of immunity booster. We all are aware of gooseberries popularly known as amla and its benefits but always hesitate to consume as it we dont know much interesting way to how to cook the same so that it becomes tasty n can be consumed on daily basis.

INGREDIENTS FOR KHAJOOR (DATES) FIRNI

Two grated amla / gooseberries

Twelve-Fourteen medium thick green chillies

Salt to taste

¼tsp feenugreek seeds

¼tsp onion seeds

¼tsp cumin seeds

½tsp redchilli powder

¾tsp coriander powder

¾tbsp fennel powder

1tsp sugar to balance amla sourness

¼tsp hing

1 Tbsp mustard oil

½tsp turmeric powder

HOW TO COOK

1. First, grate 2 gooseberries or amla and keep it in a mixing bowl.

2. Next, add all the spices mentioned above in it. You can always make them adjust according to your taste. The above mentioned quantity is just for reference for your preparation except for fenugreek, onion and cumin seeds.

3. wash green chillies properly and make them pat dry. Take one green chilli mark a slit with the help of a knife and empty all the seeds from the back of a spoon to make a cavity to be filled in with the amla masala.

4. Please note the sugar that we add in the filling will not make the mirchi sweet but it will just balance the amla sourness. These medium thick mirchi is usually not theekha and when we take out its seeds so they are very few chances of being getting theekha.

5. Take a heavy bottom utensil, pour 1 tbsp of mustard oil in it allow it to heat properly, once its temperature is on normal , add fenugreek seeds, onion seeds and cumin seeds in oil, allow it to crack.

6. Now place all the filled mirchi into the utensil on low flame and cover it with lid.

7. After 2-3 mins , you can check and upturn all of them once they turn light brown in colour and cover the lid again for two minutes.

8. After 2 mins, check if they have become tender and soft. Turn off the gas and cover the lid for another 2 minutes.

Delicious, tangy, rich in vitamin C & iron and a immunity booster recipe is ready to serve. Enjoy it with Parathas Dal Chawal or Chole Bhature or Bademi Poori .

Books to Explore

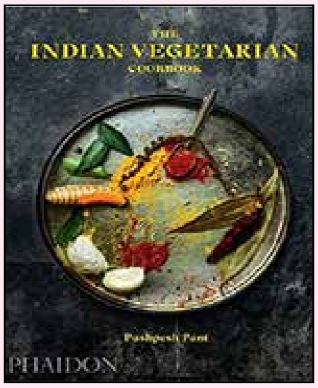

The Indian Vegetarian Cookbook

https://amzn.to/3gVNpuK

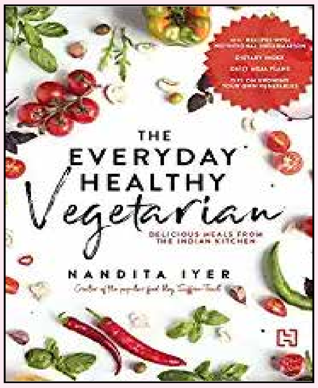

The Everyday Healthy Vegetarian: Delicious Meals from the Indian Kitchen

https://amzn.to/2Wr3Aqw

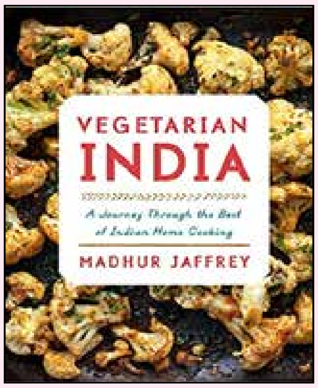

Vegetarian India: A Journey Through the Best of Indian Home Cooking

https://amzn.to/3gZ5NTF

त्योहारों के मायने

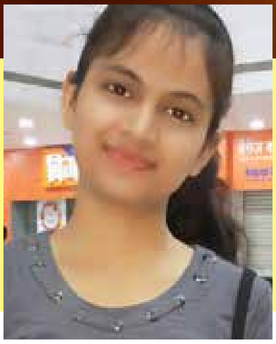

लेखिका के बारे में कुछ शब्दः निवेदिता नमन झारखंड, देवघर की निवासी है और बख्तियारपुर कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रही हैं,
संपर्क करें: namannivedita0@gmail.com

'हमारे उत्तर बिहार में एक त्यौहार-

छठ काफी हर्षोल्लाष से मनाये जाने वाला यह त्यौहार हर साल दिवाली के कुछ दिनों बाद आता है और पूरे चार दिनों तक चलता है। मतलब अगर तुम्हे कभी श्रद्दा, एकता और पवित्रता के सही मायने देखने हो तो एक बार हमारे यहां जरूर आना। यकीन मानो तुम्हें वहां से प्यार हो जाएगा' अनीता ने एक ही सांस में सब कह डाला। और वो जब भी भारत की बातें करती है, उसके चेहरे की रौनक देखते ही बनती है।

अनीता पच्चीस वर्ष की एक कार्य कुशल लड़की है जो काम के सिलसिले में अकसर विदेश में ही रहती है। कामयाबी के आकाश में उड़कर भी उसे अपनी मिट्टी ही सर्वप्रिय है।

अनीता की सब से खास बात यह है कि उसे उदास या किसी की शिकायत करते हुए शायद ही किसी ने देखा हो। हमेशा सब को खुशियां और स्नेह ही बांटते रहती हैं।

मल्टीनेशन कम्पनी में काम करने वाली अनीता साल में एक बार किसी तरह अपनों के पास जरूर लोटती है, वहां जहाँ उसकी आत्मा रहती है।

लेकिन इस साल सब कुछ उथल-पुथल हो गया।

कोरोना महामारी ने पुरे विश्व को अपने चपेट में ले लिया था। पहले इस लॉकडाउन के कारण विदेश में ही फंस गयी और अब ये कंपनी वाले अपने घाटे से उभरने के कारण उसे छुट्टी भी नहीं दे रहे थे।

अनीता की आत्मा बुरी तरह दु:ख रही थी। अब न उसका जी काम में लग रहाथा न ही वह छुट्टी ले पा रही थी। पर किसी तरह उसने अपने आप को काम में उलझाए रखा । पर मन को कहां कोई रोक सकता है।

उसका भी मन बार-बार अपने परविार में जा अटक रहा था।

पर कहते हैं न हमारे परवार से दूर भी एक परिवा होता है- हमारे दोस्तों का।

उन से लाख छुपाओं पर वो तो आप के मन की व्यथा समझ ही लेते हैं।

अनीता के भी दोस्त उसके इस फीकी मुस्कान से दुखी थे।

उन्होंने तय किया चाहे थोड़ा ही सही लेकिन वो सब अनीता को अपने घर की कमी नहीं महसूस होने देंगे।

देखते ही देखते दिवाली का त्यौहार भी आ गया। ‘आज तो सब कितने व्यस्थ होंगे, मां कितनी सारी मिठाइयां बनाती होंगी।

पूरा परिवार सजावट और दिवाली की दौरभाग में होगा। देखो तो मुझे बस एक व्हाट्सएप पर शुभकामनाएं भेज दी।’ सोच कर वह और दुखी हो उठी।

इतने में हीरो बर्ट का फोन आया और उसे काम के सिलसिले में एक निश्चित जगह पर मिल ने बुलाया। बेमन से वह नहाने और तैयार होने गयी। खेर ! काम है तो करना ही होगा।

कैब पकड़कर जब वह निश्चत स्थान पर पहुंची तो देखते ही रह गयी। समाने के पार्क को सजाया गया था जिस के एक कोने में एक मंदिर था और उस मंदिर में मूर्ती को स्थापित किया गया था।

सारे लोग भारतीय परिधान में क्या खूब जच रहे थे!

अनतीा के आंखों में आंसु छलक पड़ें। वो अपने दोस्तों के पास गयी जो एक कोने में भारतीय भोजन किसी विडिओ से देख बना रहे थे।

अनीता इतनी खुश थी की कुछ बोल ही नहीं पा रही थी। अंत में इतना ही बोल पायी की ‘मैं समझती थी कि हमारा भारत बस भारत में ही है।

मैं तो भूल ही गयी थी त्यौहार अपनों से है, और अपने वो है जो आपकी खुशियों के लिए कुछ भी कर सकते हैं। शुक्रिया और बहुत सारा प्यार !!!’

सभी के आंखों में आंसु और मुस्कान, दोनों ही थे जो दिवाली के दिये के लौ में जगमगा रहे थे।

BEWILDERING BLOGS

DOMESTIC VIOLENCE IN THE COVID -19 PERIOD

About the Author: Rajendra Prasad Koirala is the Director – HR at Glacier International College. He is also associated as an Assistant Professor at Padma Kanya Campus, Tribhuwan University. He lives in Kathmandu, Nepal. He can be reached at : koiralarp46@gmail.com, 977-9851136302

Since the day when UN declared COVID-19 (Coronavirus) as Pandemic, many countries, including Nepalhas been implementing complete lock down to prevent the spread of virus.

As per the rules of lockdown, people are stuck at some places, families are spending time together but when it comes to families, not everyone is enjoying this “family time”.

After the calamity of COVID-19, another calamity we are facing today is Domestic Violence. This crime is set to soar by 20% during global lockdown in a report from The Guardian. At least 15m more cases of domestic violence are predicted around the world this year as a result of pandemic restrictions, according to new data by UNFPA that paints a bleak picture of life for women over the next decade. Still there are many cases that aren’t reported and hidden. It’s becoming the hidden war during this pandemic.

Activists of human rights and Human Rights Commission of Nepal have reported that violence against women and girls (minors) has, terribly, increased. It is speculated that if lockdown is again clamped in the nation being scared of the impending third wave, it will increase in a mammoth rate.

According to the WOREC (Women’s Rehabilitation center, a non-governmental organization working for the protection and promotion of human rights), there are unexpected domestic violence cases in Nepal. 225

domestic violence, 65 social violence, 325 rape cases, 45 attempt to rape, 30 sexual abuse,7 murder, 225 suicide, 26 cybercrime.

Since girls and women are shackled at home, they have been more prone to be abused and molested. There are several cases, speculatively, which have not been reported or hidden being afraid of so-called social image. The report, further, states that the numbers are much more alarming than expected.

Most of the rape cases and sexual abuse or molesting have been attempted by own relatives or neighbors. The girls or women aged right from 6 years to 55 years have been either molested or misconducted or even raped.

People of authority, from different segments of the society appear somewhat equivocal in this matter:

Inspector of Police, Kamala Naral of Gorakha pathetically says "Women and children from poor families are the most vulnerable. Several kinds of problems including domestic violence leave them depressed. And in worse case, the victims decide to take their own lives".

Lubharaj Neupane, Executive Director of WOREC says" The figures are alarming, and that the kind of violence women and girls face in the home environment increases during the lock-down or prohibition.

There have been gang rapes to the adult girls or women, minor rapes, rapes committed by grandfather to granddaughter, father in-laws to daughter-in laws

Shristi Kolakshyapati at WOREC says"The workload of women and girls have increased exponentially during the lock-down which raises their vulnerability to gender-based violence".

Anup Raj Sharma, the chairperson of NHRC (National Human Rights Commission) says" No

province, out of seven provinces, is aloof from rape cases and domestic violence in the nation. Rape victims are reluctant to file a case against the rapists to the police office since they have not faith in police department. He, further, says "Police must work hard to win people's heart and trust and make them feel free to seek police assistance".

In accordance with the report made public by "Republica "national daily newspaper "As many as 2300 cases of violence against women recorded in the past nine months".

As stated by WOREC, a total of 325 rape victims are girls below 18 years of age including 49 from 2 to 10 and 244 from 11 to 18 years old. Similarly, as many as 220 rape-accused were found to be the victims' neighbors, 52 family members, 33 love partners, 8 teachers, 11 service providers and 35 strangers. The data also claims that most of those accused of committing rape are youths from 26 to 35, sporadically 55 above.

Last but not the least, history has been thewitness that women, girls and children have always been the victims during war, insurgence, strikes, mass movement, revolution, epidemic and pandemic ever since human civilization existed in the universe.

संबंध: हमारे जीवन का आधार

"मानव संबंधों पर आधारित लघु कथाएं"

भोलवा का कुर्ता

लेखिका के बारे में कुछ शब्द: चाँदनी समर पशे से एक सरकारी शिक्षिका हैं लेकिन साहित्य के क्षेत्र में भी पिछले एक वर्ष से सक्रिय हैं। इस बीच में इनकी एक उपन्यास भी छप चुकी है। साथ ही इनकी रचनाएं देश के विभिन्न ऑनलाइन व ऑफलाइन पत्रिका में छप चुकी है। इन्हें अपनी रचनाओं के लिए तीन बार राष्ट्रीय व अंतरा-ट्रीय सम्मान से भी सम्मानित किया गया है। यह साहित्य में उपन्यास के साथ साथ लघु कथा व गजलें भी लिखती हैं।

संपर्क करें: chandnisamer1@gmail.com

उसने आंख खोलकर एक बार देखा और फिर अपनी फटी कम्बल खींच ली। सर्दी आज भी बहुत अधिक थी। मगर तभी उसकी पत्नी गंगा की आवाज ने उसे सीधा उठा कर बैठा दिया। नित्य क्रिया से मुक्त होकर अब वो आंगन में आया तो गंगा फिर ाुरू हो गई।

जाओ आज तो जमींदार के यहां से अपनी मजदूरी ले आओ। कम से कम भोलवा को एक ऊनी कुर्ता तो सिलवा दो। एक ही कुर्ता था वो भी फट गया। सर्दी में ठिठुरता रहता है। हम तो कैसे भी गुजारा कर लें पर उस पर तो दया करो। क्या पूरा पत्थर का हृदय हो गया है तुम रा? अपनी संन्तान पर भी दया माया नहीं।

आरे चुप कर चुप कर। का हे सुबह सुबह चालू हो जाती हैं इस में हमरा का दो-ा है जब जाते हैं तो जमींदार कहता है दो दिन बाद आओ। तो हमका करें? ललुआ ने झुंझला कर कहा।

जमींदार लोग भी लोभी हो गए हैं। पापी। इतना धन समेटे बैठे हैं तब भी गरीब का पैसा देने में इतनी ममता लगती है। जितना में हम रामहीना दिन का रशन हा जाय उतनी तो एक दिन में चाय सुड़क जाते हैं। फिर भी ..... पापी। नरक में भी जगह न मिलें।

गंगा ने चूल्हें में फूंक मारते हुए कहा तो लालू ने उसे टोक दिया-

अरे चुपकर। क्या बकती है। उन्हीं से तो हमारा दाना पानी चलता है। ऐसे उन को श्रापोगी तो तुम को क्या स्वर्ग मिलेगा।

हां-

लालू चुपचाप जाकर खड़ा हो गया। कुछ कहने की हिम्मत न पड़ रही थी।

तू फिर आ गया रे ललुआ। इतने पैसे के लिए इतना गादा! जमींदार ने उसे देख कर कहा।

साहब भेलवा का कुर्ता खरीदना है। सर्दी बड़ी पड़ रही है ना। लालू ने दीनता भाव से कहा तो जमीदार हंस पडे। अरे कहां है सर्दी? हमें तो नहीं लगती।

हां तुम हमी को बोलो। उन के सामने तो बोल फूट ती नही। अंग्रेजों का राज है आज भी। झूट कहते हैं कि देश आजाद हो गया है। हमारे लिए तो आज भी वही भुखमरी वही गरीबी।

गंगा बड़बड़ाती रही जब लालू बाहर निकल गया। गंगा को तो डांटा मगर उसका प्रत्यक्ष उदाहरण बरामदे में बैठा था। भोलवा अपनी फटी कमीज में हाथ पैर सिकोड़े था। एक क्षण को वह उसे देखता रहा फिर आगे बढ़ गया कि तभी पीछे से भेलवा ने उस की कमीज खींची।

बाबा आज हमारा कुर्ता ले आना।

उसने पलटकर देखा। मन अचानक जाने कैसा हो गया। वे बिना कुछ बोले तेजी से वहां से निकल गया।

जमींदार के घर पहुंचा तो वहां सुबह की टीपार्टींच चल रही थी। एक बड़े से अलाव के पास जमीदार चंद्रभू-ाण ठाकुर अपनी पत्नी व दो भाइयों के साथ बैठे चाय की चुस्कियां ले रहें थें। एक ओर छोटी सी मेज पर दो तश्तरियों में बिस्कुट भी रखा था।

उनकी बात पर वह कुछ नहीं बोला केवल जलती हुई अलाव और चाय की प्याली की ओर देखकर सर झुका लिया। जमीदार की पत्नी ने धीमे स्वर में कुछ कहा तो उसने सर हिलाया।

कितने पैसे हैं तेरे? जमीदार ने लालू से पूछा।

जी सरकार 300। लालू ने आशा भरी द्-िट से देखते हुए कहा।

यह ले। कहते हुए जमीदार ने कुछ नोट निकाल उसकी ओर बढ़ाया।

परंतु यह तो 200 रू. ही हैं।

लालू थोड़ा चकित होते हुए बोला।

हॉ हॉ अभी इतना ले ले बाकी फिर ले जाना। काम तो करते ही रहना है ना। जमींदार ने चाय की चुस्की लेते हुए कहा।

लालू ने चुपचाप रुपये ले लिये। आती हुई लक्ष्मी को छोड़ना बुद्मिानी न थी। जो मिल रहा है वही गनीमत।

पैसे लेकर जब वो वापस मुड़ा तो ृारीर में उ-मा

जाग उठी जेसे जमींदार का अलाव वो अपने साथ लिए जा रहा हो।

वह तेज कदमों से खेत की पगडंडी पर भागा जा रहा था कि अचानक उसके पैर रुक गए।

अरे यह सामने कौन आ रहा है?

उसने कुछ दूरी पर हितली डुलती आकृति को देख कर सोचा। कुछ कदम चल पीपल के वृक्ष के पास पहुंचा तो वो आकृति स्प-ट दिखने लगी।

अरे यह बुढ़िया ! हे भगवान!

अचानक उसे केृारीर की सारी उ-मा लुप्त हो गई। पूराृारीर अचानक कांप उठा। ऐसा लगा कान तले आकर बुढ़िया चिल्ला रही हो-क्योंरे ललुआ, हमारा पैसा नही देगा, तीन महीने हो गए।

ृारीर में एक झुरझुरी सी हो उठी और वोृाीघ्रता से वृक्ष के पीछे छिप गया। कहीं भी बुढ़िया की दृ-िट न पड़ जाये। वह चुपचाप खड़ा था परंतु उस का मनृाोर मचाने लगा।

इन पैसों पर पहला अधिकार तो उसी का बनता है। भोलवा बीमारी की उस दुर्गम स्थिति में इसी ने मदद की थी। तीन महीने हो गए उनसे अब तक उसके पैसे नहीं लौटाया। लौटाता भी कैसे? यहां तो सदा किल्लत ही बनी रहती है। परंतु.......

उसकी दृ-िट बुढ़िया की पेवन्द से भरी चादर पर पड़ी जिस में अब भी कई खिड़किया मौजूद थी।

आह! इसे भी तो सर्दी लगती होगी। चादर है कि मच्छरदानी। ठंड से कांप रही है।

बुढ़िया को देखकर उसका मन द्रवित हो उठा। मां बाप के संस्कार कुरेदने लगे।

इतने में इस की चादर तो हो ही जायगी।

वह सोचते हुए बुढ़िया की ओर बढ़ते को हुआ कि उसके कदम फिर रुक गए। लगा भोलवा पीछे से कुर्ता खींच रहा है-

बाबा मेरा कुर्ता। उसका मासूम चेहरा नजर के सामने घूम गया। उसने धोती में बंधे पैसों को दोनों हाथों से जोर से दबाया और पुनः पेड़ से चिपक गया। कांपती हुई बुढ़िया समीप से निकल आगे बढ़ गई। उसने कातर नेत्रों से जाती हुई बुढ़िया को देखा और घर की ओर जाती हुई पगडण्डी पर चिल्लाता हुआ भागा- भोलवा का कुर्ता, भोलवा का कुर्ता.....

Model:
Sneh Anand

Her CHARISMA
His SWAG

Model:
Sourabh Mallik

HALE 'n' HEARTY

Wellness 'n' Health

Lately a lot of the new ideas and book suggestions that I have been working with have come from the Embodiment Conference. The Embodiment Conference was a HUGE virtual event that gathered the topmost professionals from various fields: dance and movement, trauma and healing, breathing and meditation etc. The overall intention of the conference was to build a sense of community, and a safe space, for people to explore theory and practice focused on improving our well-being.

About the Author: Daniel Rudolph is freelance innovator and global creative. He is passionate about forming community, and building public spaces for meaningful, transformational gathering. Currently he is spending a lot of his time learning juggling and facilitating gatherings. He also enjoys writing and sharing poetry. He lives in Utica, New York, United States. He may be reached at : danrudolph108@gmail.com

The intention of this series is the same. Each article will share the 'key points' of an influential figure in the 'Health and Wellness' world, my personal experiences/views on those thoughts, and suggestions for books that you can explore to dig deeper, on a more personal level.

Rick Hanson is a very well respected, experienced, and wise researcher and practitioner. The talk that will be summarized, and reflected upon, in this piece will focus on 'Embodied Well Being' (resilience).

The information that will be shared in this article can be helpful for people to gain a better understanding of how individuals, and communities, can act to build greater resilience for dealing with challenging circumstances.

Given the increased suffering that has been caused this year, as a result of COVID-19, as well as the forecasted challenges that lie ahead, this information can be very helpful for becoming more grounded amidst chaos and uncertainty and for working with whatever challenges confront us.

After summarizing the ideas that Rick shared, I will also share the simple, but powerful, embodied practices that can enable us to bring these ideas into our daily lives.

There were many ideas that Rick shared that caught my attention. Here are a few:

- How do we grow self-worth? Inner peace? Freedom? Grit? Grattitude? Compassion?
- Resilience -- the capacity to recover from adversity and pursue your goals despite challenges -- the ability to 'dare greatly'
- The harder the person's life the more important it is to have inner-strength.
- The majority of inner strength is acquired - ⅓ inherited / ⅔ we can decide
- "No one can stop us and no one can do the work for us"
- Reflection Question: What do you wish was more present in your mind? How can you bring more of this into your mind?
- There are 2 Stages for growing these resources:
- activation (having the experience - state) → installation (making it part of you - trait)
- Often we give more attention to activation and not enough to installation
- Reflection Question: How many experiences lead to lasting change?
- We have the ability to get better at installation … :)
- HEAL -- "Have it, Enjoy it"

- H - have beneficial experience (activation) (state)
- E - enrich the experience -- mobilize, take time to be mindful of an experience/accomplishment
- A - Absorb - feel the sensations that this gives you, let it settle
- L - link to other experiences (both positive and negative)
- Focusing on installation of our positive experiences can increase our ability to: cope with stress, recover from trauma, pursue our aims, become less vulnerable to manipulation

Practice: 3 breathes

- Take a breath(s) - Feel you chest as a whole (left side, right side, front, back etc.)
- Take a breath(s) - Think of a time when you cared for someone (appreciation, camaraderie, love) (you can put your hand over your heart if you like)
- Take a breath(s) - Think of a time when you felt like you were cared about

My Views:

We have the ability to build our resilience everyday by simply taking a little bit of extra time to let the positive experience soak in. We can also intentionally bring to mind previous positive experiences, of feelings that we hope to feel more of in our lives, by reflecting on past experiences. The world is so divided right now. There is so much separation on an individual, and community, level. We are overloaded with negativity, conflict, and divisiveness (news, social media etc.). The ability to limit our negativity biases and give increased attention to the positive things that are happening in the world around us, enables is to bring more of that positivity into our lives. Once we become experienced, and embody well-being, we have the potential to spread it in all of our actions and interactions. It is important to reflect, "Am I perpetuating separateness, and violence, or am I perpetuating togetherness, and peace?"

Books to Explore

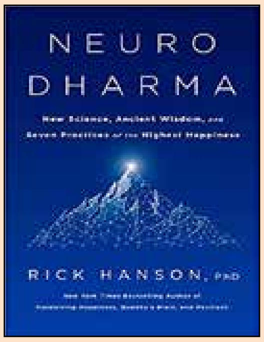

Neurodharma: New Science, Ancient Wisdom, and Seven Practices of the Highest Happiness - Rick Hanson

https://amzn.to/3axXPzlto /3axXPzldp/155643880X

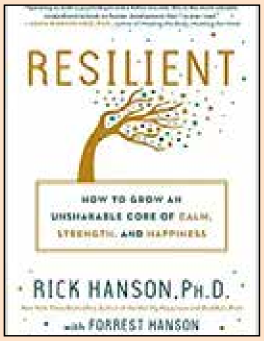

Resilient: How to Grow an Unshakable Core of Calm, Strength and Happiness - Rick Hanson

https://amzn.to/2WINJ6N

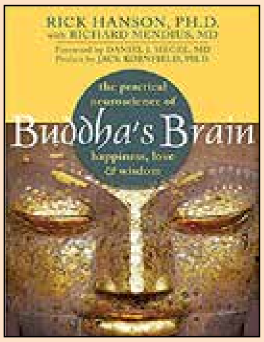

Buddha's Brain: The Practical Neuroscience of Happiness, Love and Wisdom - Rick Hanson with Richard Mendius

https://amzn.to/2Kujk90

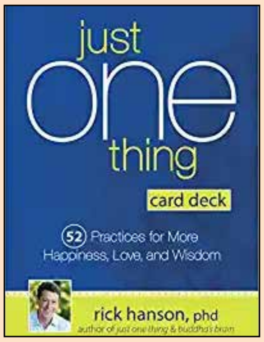

Just One Thing: 52 Short Practices - Rick Hanson

https://amzn.to/3nK72sw

Pose... Write... Post...

and become WINNING MODEL

Books33 Congratulates all the WINNERS!!!

DANCING on the TUNES of LIFE

1st WINNER

Priyadarshi Priyanakan

in the centre)

Eyes Say It All

2nd WINNER

Priyanka Mazudar

GLOWING with LIFE

3rd WINNER

Dr. Susmita Paul

EXAMS ‘N’ EDUCATION

नयी शिक्षा नीति के अनुसार मातृ भाषा देने के फायदे नुकासन

डॉ कनक लता तिवारी

लेखिका को बारे में कुछ शब्द डॉ कनम लता तिवारी एक संवा निवृत्त प्रोफेसर हैं और साहित्य के क्षेत्र में काफी जाना माना नाम हैं। इनकी रचनाएं देश के विभिन्न ऑनलाइन व ऑफलाइन पत्रिका में छप चुकी हैं। संपर्क करे: kanaklatatiwari@yahoo.co.in

नयी शिक्षा नीति में स्कूल पाठ्यक्रम के 10+2 ढांचे की जगह 5+3+3+4 का नया पाठयक्र लागू हुआ है और मातृभाषा और स्थानीय बनाने के लिए अब स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक भारतीय भाषाओं को शामिल करने की पहल की हें सरकार ने पाँचवी क्लास तक मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा में पढ़ाई का माध्यम रखने की योजना बनाई है, इसे क्लास आठ या उससे आगे भी बढ़ाया जा सकता है। जब मात्र भाषा का नाम आता है तो मुझे महात्मा गांधी की याद आ जाती है। 1909 में जब महात्मा गांधी ‘हिंद स्वराज’ लिख रहे थे तो उसमें वह भावी भारतीय राष्ट्र के बारे में बताते हुए कहते है ‘हमें अपनी सभी भाषाओं को चमकाना चाहिए, प्रत्येक पढ़े-लिखे भारतीय को अपनी भाषा का, हिन्दू को संस्कृत का, मुसलामन को अरबी का, पारसी को फारसी का ज्ञान होना चाहिए, और हिन्दी का ज्ञान तो सबको होना चाहिए, ऐसा होने पर हम आपस के व्यवहार में अंग्रेजी को निकाल बाहर कर सकेंगे।

नई शिक्षा नीति में निचले स्तर की पढ़ाई के माध्यम के लिए मातृभाषा/स्थानीय भाषा के प्रयोग पर जोर दिया गया है जिसका उद्देश्य बच्चों को उनकी मातृभाषा और संस्कृति से जोड़े रखते हुए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाना है। अपनी मातृभाषा/स्थानीय भाषा में बच्चे को पढ़ाने में आसानी होगी और वह जल्दी सीख पाएगा। छोटे बच्चे घर में बोले जाने वाली मातृभाषा या स्थानीय भाषा में जल्दी सीखते हैं, यदि स्कूल में भी मातृभाषा का प्रयोग होगा तो इसका ज्यादा प्रभाव होगा और वे जल्दी सीख पाएंगे और उनका ज्ञान बढ़ेगा। शिक्षा में स्थानीय भाषा शामिल करने से लुप्त हो रही भाषाओं को नया जीवनदान मिलेगा। दुनिया के सभी विकसित देशों ने अपनी मातृभाषा को ही सर्वोच्च महत्व दिया और इसी को अपने देश की शिक्षा का माध्यम

बनाया। रूस, चीन, जापान, जर्मनी, फ्रांस ने अपनी मातृभाषा को ही शिक्षा का माध्यम बनाया। लेकिन भारत में अंग्रेजी को चलाये रखने के कारण स्थानीय भाषाओं का महत्व कम हुआ। अंग्रेजी सीख्ना ठीक है, लेकिन उसे मातृभाषा से उपर स्थान देना गलत हे। नई भारतीय शिक्षा नीति में इस कमी को दूर करने का प्रयास किया गया है और इससे भारतीय भाषाओं को संरक्षण मिलेगा।

भारत की भाषायी समस्या समय के साथ-साथ जटिल रूप ले चुकी है, संविधान सभा में इस विषय पर हुई लंबी बहस का कोई परिणाम नहीं निकला, आज भारत की मुख्य धरा के विमर्श से भाषा का विचार पूरी तरह गायब है, राजनीतिक दलों के संविधानों और घोषण ापत्रों में भी इसकी कोई जगह नहीं है। जिस प्रकार का स्पष्ट विमर्श इस पर होना चाहिए था और जिस तरह का भविष्योन्मुखी प्रयास होना चाहिए था, ऐसा कुछ नहीं हुआ।

इसी का नतीजा है की कुछ वर्ष पहले आंधप्रदेश में कृष्णा जिले के एक प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज की दो छात्राओं ने आत्महत्या की तो इसके पीछे एक कारण यह भी था कि ये छात्राएं तंलुगु मीडियम से पढ़कर आई थीं और अंग्रेजी में नहीं पढ़ पा रही थी। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में एक छात्र ने इसलिए फांसी लगा ली, क्योंकि हिंदी माध्यम से पढ़ाइ करने के चलते उसे अंग्रेजी ठीक से समझ में नहीं आती थी और उसे प्रतियोगी परीक्षाओं में अच्छे अंक नहीं मिल पा रहे थे, बेंगलुरू के मंजूनाथनगर इलाके में एक मेध ाावी छात्रा आत्महत्या के इरादे से छत से कूद कर जख्मी हो गई, क्योंकि अब तक कन्नड़ माध्यम से शिक्षा ले रही उस बच्ची को अंग्रेजी माध्यम से स्कूल में डाल दिया गया था जहां वह कुछ भी समझ नहीं पा रही थी, आजकल ज्यादा रोजगार के अवसर अंग्रेजी में ही हाने के चलते माता-पिता अपने बच्चों के इसमें जबरदस्ती झोंकते रहे हैं, इसके चलते उपरोक्त घअनाओं से अध्कि कई गुना घटनाएं ऐसी होती हैं जिसमें प्रकट रूप से जान की हानि न भी दीखती हो, लेकिन हमारे छात्रा भयंकर मानसिक पीड़ा और घुटन से गुजरते रहते हैं, विदेशी भाषा द ्वारा शिक्षा पाने में दिमाग पर जो बोझ पड़ता है, वह असहय है, यह बोझ हमारे बच्चे उठा तो सकते है, लेकिन उसकी कीमत हमें चुकानी पड़ती है क्यांकि वे दूसरा बोझ उठाने लायक नहीं रह जाते, हमारे स्नातक अध्कितर कमजोर, निरुत्साही और कोरे नकलची बन जाते हैं, उनमें खेज करने की शक्ति, चिार करने की शक्ति, और अन्य गुण बहुत क्षीण हो जाते हैं क्योंकि रट कर पायी हुई विद्या हमें कहीं नहीं ले जा सकती, यहां पर जापान का उदहारण देखने योग्य है जापान ने मातृ-भाषा में शिक्षा के द्वारा जन-जागृति की है, इसलिए उनके हर काम में नयापन दिखाई देता है, वे शिक्षकों के भी शिक्षक हैं, मातृभाषा में शिक्षा के कारण जापान के जीन-जीवन में उन्नति की हिलोरें उठ रही हैं, और दुनिया जापानियों का काम अचरज भी आंखों से देख रही है।

भारत में विचार को, ज्ञान-विज्ञान को और रोजगार के अवसरों को संरचनात्मक रूप से एक खास भाषा का पर्याय बना दिया गया है, यही कारण है कि भारत का समाज औपनिवेशिक मानसिकता से बीवमार होकर अपने ही करोड़ों संभावनाशाली युवाओं को पंगु बना देने वाला एक आत्मघाती समाज है। आज भारत में तीन से चार प्रतिशत अंग्रेजीभाषी लोग भारत की 96 से 97 प्रतिशत जनता पर हरा तरह से एक अन्यायपूर्ण बढ़त बनाए हुए हैं, अंग्रेजी या दुनिया की तमाम भाषाएं अच्छी हैं, सीखने लायक हैं, लेकिन इससे आधर पर एक संरचनात्मक असमानता भारत को अराजकता की ओर ले जा रहा है, सबसे अध्कि दयनीय स्थिति तो उनकी है जो न ठीक से अपनी भाषा सीख पाए और न अंग्रेजी ही, जिसकी मौलिकता बची हुई हैं, उसके आत्मविश्वास को हिलाकर रख दिया गया है और जो किसी विदेशी भाषा कर दम पर एक अन्यायपूण र् सत्ता-संरचना में हर जगह छाए हुए हैं, उनकी मौलिकता नष्ट हो चुकी है, हमारी पूरी की पूरी पीढ़ी नकलची बन रही है, अधकचरी बन रही है, अतएव मातृ भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना एक सराहनीय कदम है।

Books 33
Befriend Books

Books33 presents

Send Your Selfie and Get Featured in our Books & Book Covers

SIZZLING SELFIE CONTEST

1. Fall in deeply in love with yourself
2. Take a selfie (preferably theme-based)
3. Write captivating captions
4. Add the THREE hashtags - #Books33 #BefriendBooks #BookedToBooks
5. Post on your social media handles – Facebook, LinkedIn & Instagram
6. Tag Books33 & SamvaadShaalaa
7. WIN a chance of getting featured as MODEL in our Books & Book Covers

Send it to us BEFORE 31st December 2020 at: support@books33.com

www.books33.com | Call us at +91-8376011031 | Follow us on

Books 33
Befriend Books

Chance to become a
PUBLISHED AUTHOR

PARTICIPATE IN OUR

STORY WRITING CONTEST

WRITERS just WRITE...

Don't PLAN, Just WRITE to strike off that ~~'aspiring'~~ word fixed before your desired identity - **AUTHOR**

Become Published Author For Free

Follow the following **3 Easy Steps**

1. Register on the link given
2. Share your COVID LOCKDOWN EXPERIENCE in 1000-1500 words in ENGLISH OR HINDI with 2 relevant pics
3. Send it to us BEFORE 31st December 2020

at: support@books33.com

www.books33.com | Call us at +91-8376011031 | Follow us on